कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

झलकारी बाई (1830–1858)

स्थान: *झाँसी, उत्तर प्रदेश*

जब हम झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की बात करते हैं, तो एक और नाम सामने आता है — जो उनके जितनी ही बहादुर थीं, और जिनकी कहानी उतनी ही प्रेरक है। वो थीं — **झलकारी बाई**।

वे झाँसी के पास एक दलित कोली परिवार में जन्मी थीं। बचपन से ही वे आम लड़कियों जैसी नहीं थीं — खेतों में काम करने के साथ-साथ वे तलवार चलाना, घुड़सवारी और निशानेबाज़ी सीखती थीं। कहा जाता है कि एक बार उन्होंने अकेले ही एक बाघ से मुकाबला किया था।

जब रानी लक्ष्मीबाई ने महिलाओं की एक सेना बनाई — **'दुर्गा दल'** — तो झलकारी बाई उसमें शामिल हुईं। उनका साहस और नेतृत्व देखकर रानी उन्हें अपना विश्वासपात्र मानने लगीं।

1857 में झाँसी अंग्रेजों से घिर गई थी। रानी को किले से बाहर निकालना ज़रूरी था, ताकि वो बाकी सेनाओं से जुड़ सकें।

तब झलकारी बाई ने एक अनोखी योजना बनाई। वे हूबहू रानी जैसी दिखती थीं। उन्होंने रानी जैसे कपड़े पहने, ज़ेवर पहने, और सेना के सामने जाकर खुद को रानी बताकर अंग्रेजों का ध्यान भटका दिया।

अंग्रेजों ने सोचा — **'हमने रानी को पकड़ लिया!'** इस बीच असली रानी सुरक्षित निकल गईं।

जब अंग्रेजों को सच्चाई का पता चला, तब वे हैरान रह गए। झलकारी बाई को या तो मार डाला गया, या कुछ किस्सों के अनुसार वे बच निकलीं और बाद में लंबी उम्र तक रहीं।

सबक: झलकारी बाई हमें सिखाती हैं कि बहादुरी किसी जाति या लिंग की मोहताज नहीं होती। उन्होंने अपने प्राणों की बाज़ी लगाकर इतिहास को बदल दिया। जब आप कभी डरें, या सोचें कि "मैं अकेला क्या सकती (सकता) हूँ?" — तो झलकारी बाई की कहानी याद कर लेना।

कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

ऊदा देवी पासी — दलित बेटी, बहादुर शहीद

स्थान: *अवध, उत्तर प्रदेश*

1857 का साल था। उत्तर भारत में ग़ुस्सा उफान पर था। अंग्रेजों के अन्याय से तंग आकर जगह-जगह बग़ावतें हो रही थीं। इस क्रांति में एक नाम गरीब दलित किसान परिवार से था — ऊदा देवी पासी।

अवध (उत्तर प्रदेश) की ऊदा देवी, नवाब वाजिद अली शाह को हटाने के बाद बेगम हज़रत महल के नेतृत्व में महिला सेना से जुड़ गई। **वे केवल सैनिक नहीं, बल्कि नेता और जुझारू योद्धा थीं।**

पति मक्का पासी के शहीद होने पर उन्होंने कसम खाई — **"फिरंगियों को अवध से भगा दूंगी!"**

जब अंग्रेजों की सेना लखनऊ पर कब्ज़ा जमाने के लिए आगे बढी, तब ऊदा देवी ने एक योजना बनाई। वे एक बड़े पीपल के पेड़ पर चढ़ गईं, अपने पास बंदूकें लेकर। जैसे ही अंग्रेज सैनिक नज़दीक आते, पेड़ पर बैठी ऊदा देवी उन पर गोली चला देती। देखते ही देखते, उस बहादुर वीरांगना ने लगभाग आठ से दस ब्रिटिश सैनिक मार गिराए।

अंग्रेज अफसर हैरान हो गए ये सोचकर की आखिर कौन है यह भारतीय सैनिक जो हमारे जवानों को मार रहा है? जब अंग्रेजों को पता चला कि पेड़ पर से हमला करने वाला एक महिला सैनिक है, तो वे चकित रह गए। गिरफ्तारी से बचने के लिए ऊदा देवी ने खुद को गोली मार ली।

सबक: ऊदा देवी पासी की कहानी हमें सिखाती है कि साहस कभी किसी जात-पात या लिंग से नहीं जुड़ा होता। औरतें सिर्फ़ घर संभालने के लिए नहीं होतीं — वो ज़रूरत पड़ी तो बंदूक भी उठा सकती हैं। देश के लिए मर-मिटने का जज़्बा हर किसी के दिल में हो सकता है। अगर ऊदा देवी जैसे लोग अपने जीवन को दांव पर लगा सकते हैं, तो हम कम से कम अपने अधिकार और अपने देश के लिए आवाज़ तो उठा ही सकते हैं।

कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

मातंगिनी हाज़रा – गोलियों के सामने तिरंगा थामे खड़ी एक दादी

स्थान: *मिदनापुर, पश्चिम बंगाल*

ये कहानी है एक बुज़ुर्ग महिला की, जो न तो सैनिक थीं, न ही नेता... लेकिन उनके भीतर था **आज़ादी का ज़ुनून**। उनका नाम था — **मातंगिनी हाज़रा**।

मातंगिनी का जन्म 1870 में बंगाल के एक छोटे से गाँव में हुआ था। बचपन से ही गरीबी और संघर्ष उनके साथी रहे। छोटी उम्र में शादी, फिर जल्दी ही पति का निधन... लेकिन इन दुखों ने उन्हें तोड़ा नहीं, बल्कि और मज़बूत बना दिया।

जब गाँधीजी ने अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ 'नमक सत्याग्रह' शुरू किया, तो **60 साल की उम्र में मातंगिनी हाज़रा भी आंदोलन में कूद पड़ीं**। गाँव-गाँव घूमकर लोगों को आज़ादी की लड़ाई से जोड़ने लगीं। ऐसा करने के लिए, अंग्रेजों ने उसे जेल भेज दिया। लेकिन इसने उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने से नहीं रोका। वे ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ने के लिए लोगों को संगठित करती रहीं।

1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू हुआ। मातंगिनी अब 72 साल की थीं, लेकिन हिम्मत से बिल्कुल जवान। एक दिन उन्होंने गाँव के 6000 लोगों के साथ वे तिरंगा लेकर मिदनापुर की एक पोइस चौकी की ओर चल दी। उद्देश्य था यूनियन जैक को हटाना और तिरंगा फहराना।

अंग्रेज़ सिपाही डर गए – और गोलियाँ चलाने लगे। सब पीछे हट गए, लेकिन मातंगिनी नहीं रुकीं। **3 गोलियाँ उनके शरीर में लगीं...** लेकिन उनके हाथ में तिरंगा तब तक लहराता रहा, जब तक वो गिर नहीं गई।

उनकी आख़िरी साँसों में भी बस एक ही शब्द था — "वंदे मातरम्"।

सबक: मातंगिनी हाज़रा हमें सिखाती हैं कि **देशभक्ति उम्र की मोहताज नहीं होती।** अगर दिल में साहस और सच्चा इरादा हो, तो **एक अकेली बुज़ुर्ग महिला भी साम्राज्य की जड़ों को हिला सकती है।** हम सबको आज़ादी ऐसे ही **हज़ारों गुमनाम नायकों** की कुर्बानी से मिली है। हमें इसे कभी भूलना नहीं चाहिए।

कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

दुर्गाबाई देशमुख: छोटी उम्र, बड़ा सपना

स्थान: *राजमुंद्री, आंध्र प्रदेश*

1909 में आंध्र प्रदेश के राजमुंद्री में एक साधारण परिवार में जन्मी दुर्गाबाई देशमुख के सपने बहुत बड़े थे। 10 साल की उम्र में उन्होंने काकीनाडा में महिलाओं के लिए हिंदी पाठशाला शुरू की और माँ के साथ **500 से ज़्यादा महिलाओं को हिंदी सिखाई,** ताकि वे आज़ादी की लड़ाई में जुड़ सकें।

महात्मा गांधी और कस्तूरबा गांधी ने उनकी पाठशाला देख कर उन्हें सच्ची देशभक्त कहा। उसी दिन से उन्होंने खादी पहनना शुरू किया और अंग्रेज़ी स्कूलों का बहिष्कार किया।

एक और हिम्मत की बात सुनो — जब वे **सिर्फ 8 साल की थीं**, तब उनका **बाल विवाह** हो गया था। लेकिन बड़ी होते ही उन्होंने अपने पति को छोड़ दिया और **पढ़ाई पूरी करने का फैसला किया**। उन्होंने **बी.ए., एम.ए. और वकालत** की पढ़ाई की, और फिर मद्रास (आज का चेन्नई) में वकील बन गई।

लेकिन सिर्फ़ वकील बनना ही उनका सपना नहीं था — उनका सपना था **देश की सेवा** करना। उन्होंने **नमक सत्याग्रह** और **भारत छोड़ो आंदोलन** जैसे आंदोलनों में हिस्सा लिया और **कई बार जेल** भी गई।

आज़ादी के बाद उन्होंने **'आंध्र महिला सभा'** की स्थापना की, जो आज भी स्कूल, अस्पताल और अनाथालय चला रही है। वे **संविधान सभा की सदस्य** बनीं और **बाल विवाह, दहेज तथा पर्दा प्रथा के खिलाफ आवाज़ उठाई।**

उनके कार्यों के लिए 1975 में उन्हें **'पद्म विभूषण'** से सम्मानित किया गया।

सबक: दुर्गाबाई हमें सिखाती हैं कि अगर इरादे मजबूत हों, तो कोई भी लड़की — चाहे वो कितनी भी छोटी क्यों न हो — बड़ा बदलाव ला सकती है। पढ़ाई, हिम्मत और मेहनत से वो देश की दिशा बदल सकती है। दुर्गाबाई की कहानी, हर बच्चे के लिए एक मिसाल है।

कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

मल्लू अक्का की कहानी: जंगलों से जेल तक की लड़ाई

स्थान: *वारंगल, आंध्र प्रदेश*

बहुत साल पहले, आंध्र प्रदेश के एक छोटे से गाँव में मल्लू नाम की बच्ची रहती थी। पिता किसान थे, पर ज़मींदारों के शोषण ने उनका जीवन कठिन बना दिया था। मल्लू ने बचपन से देखा कि कैसे गरीब किसानों से जबरन लगान वसूला जाता और विरोध करने वालों को पीटा जाता।

सिर्फ़ 11 साल की उम्र में उसने अंग्रेज़ी सरकार और ज़मींदारों के खिलाफ नारे लगाए। 13 की होते-होते वह तेलंगाना आंदोलन में शामिल हो गई। धीरे-धीरे मल्लू अक्का लोगों के हक़ की लड़ाई की नेता बनी — गुप्त बैठकों में जाती, लोगों को जागरूक करती, और ज़रूरत पड़ने पर बंदूक भी उठाती।

एक बार मल्लू और साथियों ने एक ज़मींदार के घर से अनाज लेकर गरीबों में बाँट दिया। जब कुछ लोगों ने इसे चोरी कहा, तो मल्लू बोली: **“अंग्रेज़ और ज़मींदार हमसे सब कुछ लूट लेते हैं। हम उनसे वापस लेकर गरीबों और भूखों में बाँट देते हैं। यह चोरी कैसे हो सकती है?”**

जब मल्लू 15 साल की थी, तब उन्हें **गिरफ्तार** कर लिया गया। पर जेल में भी मल्लू ने हार नहीं मानी। उन्होंने वहाँ कैदियों को पढ़ाना और हिम्मत देना शुरू किया। आगे चलकर मल्लू अक्का आंध्र प्रदेश विधानसभा की सदस्य बनीं। उन्होंने हमेशा कहा — **“मैं नेता नहीं, जनता की साथी हूँ।”**

सबक: उम्र छोटी हो या बड़ी, अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाना जरूरी है। साहस, सच्चाई और दूसरों के लिए जीने की भावना ही असली ताक़त है। बदलाव लाने के लिए किसी बड़ी कुर्सी की नहीं, बड़े दिल और मजबूत इरादों की ज़रूरत होती है।